राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

तीन/ चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम

वाणिज्य संकाय

कार्यक्रम का नाम: UG0204– तीन/चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक

बी. कॉम. (व्यावसायिक प्रशासन)

विषय - व्यावसायिक प्रशासन

(एनईपी-2020 और च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम के अनुसार पाठ्यक्रम)

शिक्षण का माध्यम: हिंदी/अंग्रेजी

शैक्षणिक सत्र 2025-26

कार्यक्रम का नाम: UG0204– तीन/चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी. कॉम. (व्यावसायिक प्रशासन)

विश्वविद्यालय का नाम	राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
संकाय का नाम	वाणिज्य
कार्यक्रम का नाम	बी. कॉम. (व्यावसायिक प्रशासन)
संकाय का नाम	प्रमुख – व्यावसायिक प्रशासन
माइनर विषय के रूप में पेश किए जाने वाले कार्यक्रमों की सूची	ABST/EAFM
आवश्यकताएँ	12वींकक्षाउत्तीर्ण।
गैर-कॉलेजिएट छात्रों के लिए प्रस्तावित	नहीं

कार्यक्रम के परिणाम (पीओ):

• व्यावसायिक ज्ञान: प्रबंधन, विपणन, वित्त और कानून जैसे विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुख व्यावसायिक अवधारणाओं, सिद्धांतों और प्रथाओं की व्यापक समझ हासिल करना।

• आलोचनात्मक सोच: गतिशील व्यावसायिक वातावरण में सूचित निर्णय लेने के लिए विश्लेषणात्मक और समस्या-समाधान कौशल विकसित करना।

• संचार कौशल: व्यावसायिक जानकारी और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए मौखिक और लिखित संचार क्षमताओं को बढ़ाना।

• नैतिक समझ: व्यावसायिक निर्णयों में नैतिक सिद्धांतों को लागू करते हुए व्यावसायिक नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी की मजबूत भावना को बढ़ावा देना ।

• नेतृत्व और टीमवर्क: नेतृत्व के गुणों और टीमों में प्रभावी ढंग से काम करने, समूह की गतिशीलता को प्रबंधित करने और संगठनात्मक सफलता में योगदान करने की क्षमता विकसित करना।

• वैश्विक परिप्रेक्ष्य: अंतर्राष्ट्रीय बाजारों, क्रॉस-सांस्कृतिक बातचीत और व्यवसाय पर वैश्वीकरण के प्रभाव सहित वैश्विक व्यावसायिक वातावरण को समझना।

• उद्यमी कौशल: व्यावसायिक अवसरों की पहचान करने, व्यावसायिक योजनाएँ बनाने और उद्यमी मानसिकता के साथ स्टार्टअप का प्रबंधन करने की क्षमता विकसित करना।

• तकनीकी दक्षता: व्यवसाय संचालन और प्रबंधन के लिए सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों सहित आधुनिक व्यावसायिक उपकरणों और प्रौद्योगिकियों के उपयोग में दक्षता प्राप्त करना।

• कानूनी कौशल: कंपनी कानून, व्यवसाय कानून और विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों को प्रभावित करने वाले विनियमों सहित व्यवसाय संचालन को नियंत्रित करने वाले कानूनी ढांचे को समझना।

• स्थिरता जागरूकता: टिकाऊ व्यावसायिक प्रथाओं के महत्व और पर्यावरण, समाज और दीर्घकालिक व्यावसायिक सफलता पर उनके प्रभाव को पहचानना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

• स्थिरता जागरूकता: टिकाऊ व्यावसायिक प्रथाओं के महत्व और पर्यावरण, समाज और दीर्घकालिक व्यावसायिक सफलता पर उनके प्रभाव को पहचानना।

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम (पीएसओ):

• व्यावसायिक संगठनों को समझना: अर्थव्यवस्था में उनकी भूमिका पर जोर देते हुए, व्यावसायिक संगठनों की संरचना, प्रकार और कार्यों का विश्लेषण करना।

• व्यावसायिक कानूनों का अनुप्रयोग: व्यावसायिक संचालन में अनुपालन सुनिश्चित करने और कानूनी चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यावसायिक कानूनों के ज्ञान को लागू करना।

• प्रबंधन सिद्धांत: किसी संगठन के भीतर संसाधनों, संचालन और लोगों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए व्यवसाय प्रबंधन के सिद्धांतों को लागू करना।

• कॉर्पोरेट कानून अनुप्रयोग: कॉर्पोरेट संस्थाओं के शासन और प्रशासन में कंपनी कानून के सिद्धांतों को समझें और लागू करना।

• व्यावसायिक वातावरण विश्लेषण: व्यावसायिक विकास के लिए अवसरों और खतरों की पहचान करते हुए, बाहरी व्यावसायिक वातावरण का आकलन और विश्लेषण करना।

• उद्यमशीलता विकास: नवाचार और उद्यमशीलता प्रक्रियाओं पर जोर देते हुए, नए उद्यमों को बनाने और प्रबंधित करने के लिए कौशल विकसित करना।

• विपणन रणनीतियाँ: विपणन के सिद्धांतों का उपयोग करके उत्पादों और सेवाओं को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने वाली विपणन रणनीतियाँ तैयार करें और उन्हें क्रियान्वित करना।

• मानव संसाधन प्रबंधन: संगठनों के भीतर प्रतिभाओं की भर्ती, उन्हें बनाए रखने और विकसित करने के लिए मानव संसाधन प्रबंधन के सिद्धांतों को लागू करना।

• बिक्री और संचालन प्रबंधन: दक्षता बढ़ाने और संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बिक्री संचालन और उत्पादन प्रक्रियाओं का प्रबंधन करना।

• संगठनात्मक व्यवहार समझ: कार्यस्थल संस्कृति, प्रेरणा और कर्मचारी प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए संगठनात्मक व्यवहार की अवधारणाओं का विश्लेषण और अनुप्रयोग करना।

सेमेस्टर आधारित पेपर शीर्षक

कार्यक्रमकानाम: UG0204– तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक(व्यावसायिक प्रशासन)								
				व्यावसायिक प्रशासन	क्रेडिट			
क्रम संख्या	स्तर	सेमेस्टर	प्रकार	शीर्षक	L	T	P	कुल
1.	5	I	MJR	UG0204-BDM-51T-151- व्यावसायिक संगठन	6	0	0	6
2.	5	I	MJR	UG0204-BDM-51T-152- व्यापार विधि	6	0	0	6
3.	5	II	MJR	UG0204-BDM-52T-153- व्यवसाय प्रबंधन के सिद्धांत	6	0	0	6
4.	5	II	MJR	UG0204-BDM-52T-154- कंपनी अधिनियम	6	0	0	6

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

5.	6	III	MJR	UG0204-BDM-63T-251- व्यावसायिक वातावरण	6	0	0	6
6.	6	III	MJR	UG0204-BDM-63T-252- उद्यमिता के मूल सिद्धांत	6	0	0	6
7.	6	IV	MJR	UG0204-BDM-64T-253- विपणन के सिद्धांत	6	0	0	6
8.	6	IV	MJR	UG0204-BDM-64T-254- मानव संसाधन प्रबंधन के मूल सिद्धांत	6	0	0	6
9.	7	V	MJR	UG0204-BDM-75T-351- बिक्री संवर्धन और बिक्री प्रबंधन	6	0	0	6
10.	7	V	MJR	UG0204-BDM-75T-352- उत्पादन एवं संचालन प्रबंधन	6	0	0	6
11.	7	VI	MJR	UG0204-BDM-76T-353- अंतरराष्ट्रीय विपणन	6	0	0	6
12.	7	VI	MJR	UG0204-BDM-76T-354- संगठनात्मक व्यवहार	6	0	0	6

SEMESTER-WISE PAPER TITLES (Major & Minor)

	Subject: Business Administration	UG0204	
Semester	**Major Papers- Business Adm.**	**Minor Paper - ABST**	**Minor Paper - EAFM**
I	Business Organization Business Laws	Financial Accounting	Business Economics
II	Principles of Business Management Company Law	Business Statistics	IB&FS
III	Business Environment Fundamentals of Entrepreneurship	Cost Accounting	Financial Management
IV	Principles of Marketing Fundamentals of Human Resource Management	Income Tax Law & Practices	Indian Economy
V	Sales Promotion and Sales Management Production & Operation Management	Auditing and Financial Reporting Analysis	Project Management
VI	International Marketing Organizational Behaviour	Goods and Service Tax(GST)	Quantitative Techniques

परीक्षा योजना

1. 1 क्रेडिट = परीक्षा/मूल्यांकन के लिए 25 अंक
2. नियमित छात्रों के लिए सतत मूल्यांकन होगा, जिसमें सत्रवार कार्य और टर्मिनल परीक्षा अंतिम ग्रेड में योगदान देगी। सेमेस्टर ग्रेड पॉइंट औसत (SGPA) में प्रत्येक कोर्स के दो घटक हैं- सतत मूल्यांकन (20% वेटेज) और (अंतिम सेमेस्टर परीक्षा के अंत में) EoSE (80% वेटेज)।
3. नियमित छात्रों के लिए, EoSE में उपस्थित होने के लिए 75% उपस्थिति अनिवार्य है।
4. किसी कोर्स/विषय की EoSE परीक्षा में उपस्थित होने के लिए नियमित छात्र को मध्य सेमेस्टर परीक्षा में उपस्थित होना होगा और कोर्स/विषय में कम से कम C ग्रेड प्राप्त करनी होगी।
5. किसी कोर्स/विषय में क्रेडिट पॉइंट तभी दिए जाएँगे, जब नियमित छात्र किसी कोर्स/विषय की CA और EoSE परीक्षा में कम से कम C ग्रेड प्राप्त करेगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

6. गैर-कॉलेजिएट छात्रों के मामले में कोई सतत मूल्यांकन नहीं होगा और किसी पाठ्यक्रम/विषय में क्रेडिट अंक केवल तभी दिए जाएंगे, जब गैर-कॉलेजिएट छात्र किसी पाठ्यक्रम/विषय की EoSE परीक्षा में कम से कम C ग्रेड प्राप्त करेगा।

लेटर ग्रैड और ग्रैड अंक

लेटर ग्रैड	ग्रैड अंक	Marks Range (%)
O (Outstanding)	10	91 – 100
A+ (Excellent)	9	81 – 90
A (Very good)	8	71 – 80
B+ (Good)	7	61 – 70
B (Above average)	6	51 – 60
C (Average)	5	40 – 50
P (Pass)	4	
F (Fail)	0	
Ab (Absent)	0	

सतत मूल्यांकन के लिए परीक्षा योजना

सतत मूल्यांकन (CA) अंकों का वितरण

क्रमांक	श्रेणी	भार (कुल आंतरिक अंकों में से)		THEORY					PRACTICAL		
				कोर (केवल सैद्धांतिक)	कोर (सैद्धांतिक + प्रायोगिक)	AEC	SEC	VAC	CORE (Theory +Practical)	SEC	VAC
	अधिकतम आंतरिक अंक			**30**	**20**	**20**	**10**	**10**	**10**	**10**	**10**
1	मध्यावधि परीक्षा	*50%*		**15**	**10**	**10**	**5**	**5**	**5**	**5**	**5**
2	असाइनमेंट	*25%*		**7.5**	**5**	**5**	**2.5**	**2.5**	**2.5**	**2.5**	**2.5**
3	उपस्थिति	*25%*		**7.5**	**5**	**5**	**2.5**	**2.5**	**2.5**	**2.5**	**2.5**
		नियमित कक्षा उपस्थिति	= 75%	3	2	2	1	1	1	1	1
			75-80%	4	3	3	1.5	1.5	1.5	1.5	1.5
			80-85%	5	4	4	2	2	2	2	2
			> 85%	7.5	5	5	2.5	2.5	2.5	2.5	2.5

नोट:

1. सतत मूल्यांकन की सम्पूर्ण जिम्मेदारी संबंधित शिक्षक की होगी।
2. सतत मूल्यांकन के लिए पेपर सेटिंग, मूल्यांकन, निरीक्षण आदि के लिए कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।
3. सतत मूल्यांकन के लिए पेपर सेटिंग और मूल्यांकन की जिम्मेदारी शिक्षक की होगी।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

4. सतत मूल्यांकन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा कोई उत्तर पुस्तिका/प्रश्न पत्र आदि उपलब्ध नहीं कराए जाएंगे।
5. कॉलेजों को सतत मूल्यांकन, उपस्थिति आदि का रिकॉर्ड रखने की सलाह दी जाती है।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

EoSEपरीक्षा योजना

CA – सतत मूल्यांकन

EoSE – सेमेस्टर के अंत में परीक्षा

प्रकार	पेपरकोडऔरनामकरण	परीक्षाकीअवधि		अधिकतमअंक (मिडटर्म + EoSE)		न्यूनतमअंक (मिडटर्म + EoSE)	
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-51T-151- व्यावसायिक संगठन	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-51T-152- व्यापार विधि	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-52T-153- व्यवसाय प्रबंधन के सिद्धांत	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-52T-154- कंपनी अधिनियम	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-63T-251- व्यावसायिक वातावरण	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-63T-252- उद्यमिता के मूल सिद्धांत	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-64T-253- विपणन के सिद्धांत	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-64T-254- मानव संसाधन प्रबंधन के मूल सिद्धांत	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120Marks	EoSE	48 Marks

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

सैद्धांतिक	UG0204-BDM-75T-351- बिक्री संवर्धन और बिक्री प्रबंधन	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-75T-352- उत्पादन एवं संचालन प्रबंधन	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-76T-353- अंतरराष्ट्रीय विपणन	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks
सैद्धांतिक	UG0204-BDM-76T-354- संगठनात्मक व्यवहार	CA	1 Hr.	CA	30 Marks	CA	12 Marks
		EoSE	3 Hrs.	EoSE	120 Marks	EoSE	48 Marks

प्रश्न पत्र में तीन भाग एए बी और सी शामिल हैं।

भाग-ए: 20 अंक

भाग ए में 10 अति लघु उत्तरीय प्रश्न (20 शब्दों की सीमा के साथ) अनिवार्य होंगेए जिनमें से प्रत्येक दो अंकों का होगा।

भाग-बी: 20 अंक

पेपर के भाग बी में प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न का चयन करते हुए 4 प्रश्न होंगे और छात्र को किन्हीं 2 प्रश्नों (100 शब्दों की सीमा के साथ) का प्रयास करना होगाए जिनमें से प्रत्येक 10 अंकों का होगा।

भाग-सी: 80 अंक

प्रश्न पत्र के भाग सी को प्रश्न संख्या 6.9 वाली चार इकाइयों में विभाजित किया जाएगा। प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प वाला एक प्रश्न होगा। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का होगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: व्यावसायिक संगठन
पेपर कोड:UG0204-BDM-51T-151

सेमेस्टर: I

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
I	UG0204-BDM-51T-151	व्यावसायिक संगठन	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
प्रारंभिक	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

UG0204-BDM-51T-151 व्यावसायिक संगठन

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य व्यावसायिक संगठन का ज्ञान और व्यावहारिक व्यावसायिक स्थितियों में अवलोकन प्रदान करना है।

इकाई I: परिचय: व्यापार, उद्योग और वाणिज्य की परिभाषा और आज के परिवेश में उनका अंतर्संबंध। MSME- परिभाषाएं, गतिविधियों की रूपरेखा, भारतीय अर्थव्यवस्था में MSME की भूमिका।

इकाई II: व्यापार का वातावरण: पर्यावरण के तत्व: प्राकृतिक, कानूनी और राजनीतिक, तकनीकी, आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और अंतर्राष्ट्रीय; व्यापार-पर्यावरण अंतरफलक; SWOT विश्लेषण, रणनीति निर्माण।

इकाई III: व्यापार संगठन के रूप: एकल स्वामित्व, साझेदारी, सीमित देयता भागीदारी, निजी लिमिटेड कंपनी, सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी, सहकारी समितियां और स्वयं सहायता समूह, एचयूएफ और पारिवारिक व्यवसाय; व्यावसायिक संगठन के उपयुक्त रूप का चयन के लिए मानदंड। MSME के लिए विभिन्न रूपों की सापेक्ष उपयुक्तता।

इकाई IV: भारत में स्टॉक एक्सचेंजों की उत्पत्ति, विकास और गतिविधियाँ। सेबी, ओटीसीई और एनएसई का संक्षिप्त अध्ययन। वित्त की आवश्यकता और महत्व, वित्त के स्रोत, राजस्थान वित्त निगम का संक्षिप्त अध्ययन।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

1. छाबड़ा, टी.एन., मॉडर्न बिजनेस ऑर्गनाइजेशन, नई दिल्ली, धनपत राय एंड संस, नवीनतम संस्करण।
2. छाबड़ा टी.एन., बिजनेस ऑर्गनाइजेशन एंड मैनेजमेंट, सन इंडिया पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
3. शंकर, गौरी, मॉडर्न बिजनेस ऑर्गनाइजेशन, महावीर बुक डिपो, नई दिल्ली।

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

4. तुलसियान, पी.सी., बिजनेस ऑर्गनाइजेशन एंड मैनेजमेंट, पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली।
5. त्रिपाठी, पी.सी., प्रिंसिपल्स ऑफ मैनेजमेंट, टाटा मैकग्रॉ हिल, पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. भारतीय व्यावसायिक संगठन संरचना का ज्ञान प्राप्त करें।
2. व्यावसायिक लेनदेन और व्यावसायिक वातावरण में इसकी प्रवर्तनीयता के बारे में बुनियादी ज्ञान बढ़ाएँ।
3. व्यावसायिक संगठनों के विभिन्न रूपों की समझ विकसित करें।

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)

पाठ्यक्रम का शीर्षक: व्यापार विधि
पेपर कोड: UG0204-BDM-51T-152
सेमेस्टर: I

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
I	UG0204-BDM-51T-152	व्यापार विधि	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
प्रारंभिक	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

UG0204-BDM-51T-152:व्यापार विधि

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. कानून की उन शाखाओं का ज्ञान प्राप्त करना जो व्यावसायिक लेनदेन, कुछ कॉर्पोरेट निकायों और संबंधित मामलों से संबंधित हैं।

2. व्यावहारिक व्यावसायिक स्थितियों में इन कानूनों के अनुप्रयोगों को समझना।

इकाई **I:** भारतीय अनुबंध अधिनियम, **1872,** धारा **1** से **75**

इकाई **II:** विशेष अनुबंध; क्षतिपूर्ति; गारंटी; जमानत और प्रतिज्ञा, एजेंसी

इकाई **III:** भारतीय माल बिक्री अधिनियम, **1930**

इकाई **IV:** उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम **1986**

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

1. देसाई, टी.आर. : अनुबंध अधिनियम, माल की बिक्री अधिनियम और भागीदारी खाते, एस.सी. सरकार एंड संस प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता
2. कुचल, एम.सी. और कुचल, विवेक : व्यापार कानून, विकास पब्लिशिंग हाउस, नोएडा

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

(यूपी)।
3. सिंह, अवतार : मर्केंटाइल कानून के सिद्धांत, ईस्टर्न बुक कंपनी, लखनऊ
4. कपूर, एन.डी. : व्यापार कानून, सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली
5. तुलसियान पी.सी., तुलसियान भारत, तुलसियान तुषार : व्यापार कानून, एस.चंद पब्लिशिंग।
6. चंद्रा, पी.आर. : व्यापार कानून, गलगोटिया, नई दिल्ली
7. भारतीय अनुबंध अधिनियम, 1872- बेयर एक्ट।
8. माल की बिक्री अधिनियम, 1930- बेयर एक्ट।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. विभिन्न कानूनी अधिनियमों के तहत अधिकारों और कर्तव्यों को जानना।
2. व्यावसायिक स्थितियों पर विभिन्न कानूनों की उपयुक्तता के परिणामों को समझना।
3. कानूनी मामलों के उपयोग के माध्यम से आलोचनात्मक सोच विकसित करना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: व्यवसाय प्रबंधन के सिद्धांत
पेपर कोड: UG0204-BDM-52T-153
सेमेस्टर: II

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
II	UG0204-BDM-52T-153	व्यवसाय प्रबंधन के सिद्धांत	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
प्रारंभिक	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

UG0204-BDM-52T-153 व्यवसाय प्रबंधन के सिद्धांत

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. छात्रों को प्रबंधन की सार्वभौमिकता और औपचारिक प्रबंधन शिक्षा की आवश्यकता के बारे में जागरूक करना।

2. उन्हें प्रबंधन विचार की विकास प्रक्रिया की सराहना करने में सक्षम बनाना।

3. उन्हें विभिन्न प्रबंधकीय कार्यों और उनके अभ्यास के पीछे के सिद्धांतों से परिचित कराना।

4. छात्रों को प्रबंधन के क्षेत्र में हुए नवीनतम परिवर्तनों से छात्रों को परिचित कराना ।

इकाई I:परिचय: प्रबंधन की अवधारणा, प्रकृति, प्रक्रिया और प्रबंध का महत्व; प्रबंधकीय भूमिकाएँ (मिंट्ज़बर्ग); प्रबंधन के कार्यात्मक क्षेत्रों का अवलोकन, प्रबंधन विचारों का विकास - शास्त्रीय, नव-शास्त्रीय और आकस्मिक दृष्टिकोण। नियोजन: अवधारणा, प्रक्रिया, प्रकार, स्तर, लाभ, हानियाँ और नियोजन के सिद्धांत।

इकाई II:निर्णय लेना: अवधारणा और प्रक्रिया; उद्देश्य द्वारा प्रबंधन (एमबीओ)। संगठन: अवधारणा, प्रकृति, प्रक्रिया और महत्व, अधिकार और उत्तरदायित्व संबंध। केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण; प्रबंधन का विस्तार। समन्वय: अर्थ, महत्व, सिद्धांत और तकनीक।

इकाई III:निर्देशन: अर्थ और सिद्धांत। अभिप्रेरणा:कर्मचारियों को परारित करना, अवधारणा, महत्व, सिद्धांत: मास्लो, हर्ज़बर्ग, मैकग्रेगर और ओची। नेतृत्व- संकल्पना और नेतृत्व शैलियाँ; लिकर्ट की प्रबंधन प्रणाली।

इकाई IV:प्रबंधकीय नियंत्रण: संकल्पना और प्रक्रिया; प्रभावी नियंत्रण प्रणाली; नियंत्रण की तकनीकें। परिवर्तन प्रबंधन: संकल्पना, प्रकृति, परिवर्तन के प्रकार और नियोजित परिवर्तन की

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

प्रक्रिया, परिवर्तन का प्रतिरोध और परिवर्तन के प्रतिरोध को कम करने की विधि।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- हेरोल्ड नूट्ज़ और हैंज वीरिच: प्रबंधन की अनिवार्यताएँ, टाटा मैकग्रॉ हिल, नई दिल्ली
- विजय कुमार कौल: व्यवसाय प्रबंधन, विकास पब्लिशिंग हाउस, नोएडा (यूपी)।
- लुइस ए. एलन: प्रबंधन और संगठन, मैकग्रॉ हिल, टोक्यो
- एन्सॉफ़, एच.आई.: कॉर्पोरेट रणनीति, मैकग्रॉ हिल, न्यूयॉर्क
- हैम्पटन डेविड आर.: आधुनिक प्रबंधन, मैकग्रॉ हिल, न्यूयॉर्क
- जेम्स ए.एफ. स्टोनर, आर. एडवर्ड फ्रीमैन, डैनियल आर. गिल्बर्ट, जूनियर: प्रबंधन, प्रेंटिस हॉल, नई दिल्ली।
- हार्से, पॉल और ब्लैंचर्ड केनेथ एच: संगठनात्मक व्यवहार का प्रबंधन-मानव संसाधन का उपयोग, प्रेंटिस हॉल ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली
- जॉन एम. इवानसेविच, जेम्स एच. डोनेली, जूनियर जेम्स एल. गिब्सन: प्रबंधन सिद्धांत और कार्य। एआईटीबीएस प्रकाशक और वितरक, नई दिल्ली।
- जॉर्ज आर. टेरी, स्टेफ़जेन जी. फ्रैंकलिन: प्रबंधन के सिद्धांत, एआईटीबीएस प्रकाशक और वितरक, नई दिल्ली।
- आर.डी. अग्रवाल: संगठन और प्रबंधन, टाटा मैकग्रॉ हिल, नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. औपचारिक प्रबंधन शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार करना।
2. प्रभावी प्रबंधक बनने के लिए कौशल हासिल करना।
3. व्यवसाय और उद्योग से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए बुनियादी व्यवसाय प्रबंधन सिद्धांतों को लागू करने की क्षमता हासिल करना।
4. जहाँ भी संभव हो प्रबंधन सिद्धांतों का अभ्यास करना और उपलब्ध संसाधनों का अधिक उत्पादक रूप से उपयोग करना।

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)

पाठ्यक्रम का शीर्षक: कंपनी अधिनियम

पेपर कोड: UG0204-BDM-52T-154

सेमेस्टर: II

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
II	UG0204-BDM-52T-154	कंपनी अधिनियम	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
प्रारंभिक	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य कंपनी अधिनियम, 2013 के प्रावधानों के अनुसार व्यवसाय और उसकी प्रक्रियाओं को विकसित करना और समझना है।

इकाई I: कंपनी अधिनियम, 2013 की पृष्ठभूमि और प्रमुख विशेषताएं। कंपनी और इसकी विशेषताएं। कंपनियों के प्रकार। कंपनी और साझेदारी के बीच का अंतर। कॉर्पोरेट पर्दाउठाना। कंपनी का गठन और समामेलन- प्रवर्तक और उनकी कानूनी स्थिति, पूर्व-समामेलन अनुबंध और अनंतिम अनुबंध, कंपनी का ऑनलाइन पंजीकरण, समामेलन प्रमाणपत्र। पार्षद सीमानियम, पार्षद अन्तर्नियम - रचनात्मक सूचना और आंतरिक प्रबंधन का सिद्धांत।

इकाई II: प्रविवरण: अर्थ और परिभाषा - विषयवस्तु, प्रविवरण के संबंध में सांविधिक आवश्यकताएं। माना हुआ प्रविवरण, शेल्फ और मायावी प्रविवरण, प्रविवरण में मिथ्याकथन: सिविल और आपराधिक दायित्व।

पूंजी जुटाने के विभिन्न तरीके। ग्लोबल डिपॉजिटरी रसीदें (जीडीआर), बुक बिल्डिंग, प्रतिभूतियों कानिर्गमन - निजी आधारपर, सार्वजनिक निर्गमन, अधिकार निर्गमन, बोनस शेयर; कर्मचारी स्टॉक विकल्प योजना (ईएसओएस), स्वेटइक्विटी शेयर। शेयरों की पुनर्खरीद, शेयरों का आवंटन, शेयरों की जब्ती, और प्रतिभूतियों का अन्तरण एवंपारेषण।

इकाई III: निदेशक: निदेशक का वर्गीकरण - महिला निदेशक, स्वतंत्र निदेशक, शेयरधारक निदेशक, निदेशक पहचान संख्या (डीआईएन), निदेशक की नियुक्ति, योग्यता और अयोग्यता। कानूनी स्थिति, शक्तियाँ और कर्तव्य, निदेशक को हटाना, निदेशक को ऋण और निदेशक को पारिश्रमिक। निदेशक मंडल की विभिन्न समितियाँ।

प्रमुख प्रबंधकीय कार्मिक - प्रबंध निदेशक, पूर्णकालिक निदेशक, प्रबंधक, कंपनी सचिव, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, निवासी निदेशक।

इकाई IV:सभाएं: वैधानिक सभा, वार्षिक साधारण सभा (एजीएम), असाधारण सभा, वर्ग सभा, वर्चुअल बैठक, हितधारकों की सभाएं।

कंपनी का समापन: समापन का अर्थ, कंपनी का विघटन, न्यायाधिकरण द्वारा समापन की संकल्पना की समझ, अनिवार्य समापन, सदस्यों का स्वैच्छिक समापन, ऋणदाताओं का स्वैच्छिक समापन।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- अवतार सिंह, इंडियन कंपनी लॉ, ईस्टर्न बुक कंपनी।
- रॉय एंड दास, कंपनी लॉ, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जीके कपूर और संजय धमीजा, कंपनी लॉ, भारत लॉ हाउस।
- सी.आर.दत्ता, कंपनी कानून पर दत्ता; लेक्सिस नेक्सिस, बटरवर्थ्स वाधवा, नागपुर।
- के.सी. गर्ग, आर.सी. चावला, विजय गुप्ता: कंपनी कानून; कल्याणी प्रकाशक।
- कुच्छल एम.सी., मॉडर्न इंडियन कंपनी लॉ, श्री महावीर बुक डिपो, दिल्ली।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

• एच.के. सहारा, कंपनी कानून; यूनिवर्सल लॉ पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली।
• वी.एस. डेटी, टैक्स और कॉर्पोरेट कानूनों की मार्गदर्शिका; टैक्समैन, नई दिल्ली।
• शुक्ला एस.एम., कंपनी अधिनियम एवं सचिवीय पद्धति।
•मित्तल और अग्रवाल: कंपनी अधिनियम एवं सचिवालय विधि।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. कंपनी अधिनियम के अंतर्गत आने वाली विभिन्न कंपनियों में शामिल नियामक पहलुओं और व्यापक प्रक्रियात्मक पहलुओं को समझना।
2. किसी कंपनी के गठन और निगमन की प्रक्रिया और कानूनी दस्तावेजों को समझना।
3. कंपनी की बैठकों और कॉर्पोरेट निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझना।
4. समापन प्रक्रिया की समझ विकसित करना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: व्यावसायिक वातावरण
पेपर कोड: UG0204-BDM-63T-251
सेमेस्टर: III

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
III	UG0204-BDM-63T-251	व्यावसायिक वातावरण	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
मध्यवर्ती	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

UG0204-BDM-63T-251:व्यावसायिक वातावरण

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. व्यवसाय संचालन के वातावरण, आर्थिक परिचालन और वित्तीय ढांचे का ज्ञान प्रदान करना
2. छात्रों को स्थानीय और वैश्विक व्यावसायिक वातावरण के विभिन्न घटकों की समझ प्रदान करना।
3. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
4. भारत में व्यावसायिक संगठनों के विभिन्न रूपों के प्रक्रियात्मक पहलुओं का अध्ययन करना

इकाई I:व्यावसायिक वातावरण का अवलोकन: व्यावसायिक वातावरण का अर्थ, परिभाषा और घटक, व्यवसाय के वातावरण को प्रभावित करने वाले कारक, आंतरिक और बाह्य वातावरण, सूक्ष्म वातावरण, स्थूल वातावरण। वातावरण के प्रकार।

इकाई II:आर्थिक वातावरण: आर्थिक वातावरण: अर्थव्यवस्था की प्रकृति, अर्थव्यवस्था की संरचना, आर्थिक स्थितियाँ। आर्थिक नीतियाँ- भारतीय अर्थव्यवस्था का उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण, रुझान और मुद्दे। आर्थिक प्रणाली (पूंजीवाद, समाजवाद, मिश्रित अर्थव्यवस्था), आर्थिक संगठन: कॉर्पोरेट क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र, संयुक्त क्षेत्र, सहकारी क्षेत्र, असंगठित क्षेत्र। W.T.O. और उभरता हुआ व्यावसायिक वातावरण।

इकाई III: सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण: सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण की प्रकृति और अवधारणा, व्यवसाय, संस्कृति और वैश्वीकरण पर सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सामाजिक लेखा परीक्षा, व्यावसायिक नैतिकता और कॉर्पोरेट

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

प्रशासन, कॉर्पोरेट नागरिकता और सामाजिक पहल

राजनीतिक और तकनीकी वातावरण: राजनीतिक और तकनीकी वातावरण की अवधारणा और महत्व। राजनीतिक संस्थाएँ: विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और व्यवसाय पर इसका प्रभाव। बुनियादी ढांचा और नीति: परिवहन अवसंरचना, संचार अवसंरचना, जल संसाधन और उनका महत्व। विदेशी निवेश का विनियमनऔर सहयोग ।

इकाई IV:कानूनी वातावरण: पेटेंट अधिनियम, 1951; उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986; पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986; विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा); प्रतिस्पर्धा अधिनियम 2002। नियामक ढांचा: नियामक निकाय और उनकी भूमिकाएँ, आयात और निर्यात नीतियाँ, और कराधान नीतियाँ। व्यवसाय पर वैश्वीकरण नीति।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- धार, पी.के., 2015. भारतीय अर्थव्यवस्था के बढ़ते आयाम। कल्याणी प्रकाशक
- रंगराजन, सी.ए.; अर्थशास्त्र में परिप्रेक्ष्य, एस.चंद एंड संस, नई दिल्ली
- चेरुनिलाम, फ्रांसिस; व्यावसायिक वातावरण - टेक्स्ट और केस, हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
- अश्वथप्पा, के.; बिजनेस एनवायरनमेंट की अनिवार्यताएं, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- ब्रैनसन विलियम एच., मैक्रो इकोनॉमिक थ्योरी एंड पॉलिसी, फर्स्ट ईस्ट-वेस्ट प्रेस, तीसरा संस्करण 2005।
- डोर्नबुश, आर. और एस. फिशर मैक्रो इकोनॉमिक छठा संस्करण प्रकाशक टाटा मैकग्रा हिल।
- ओलिवर ब्लैंचर्ड मैक्रो इकोनॉमिक चौथा संस्करण पियर्सन एजुकेशन, एलपीई।
- मैनकीव, एन. ग्रेगरी, मैक्रो इकोनॉमिक चौथा संस्करण। मैकमिलन.

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. व्यावसायिक वातावरण की जटिलताओं और व्यवसाय पर उनके प्रभाव की पहचान और मूल्यांकन करना।
2. सरकार और व्यवसाय के बीच संबंधों का विश्लेषण करना और देश की राजनीतिक, आर्थिक, कानूनी और सामाजिक नीतियों को समझना।
3. उभरते बाजारों में मौजूदा आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करना और वर्तमान और भविष्य के अवसरों का मूल्यांकन करना।
4. अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक वातावरण में विभिन्न संस्थानों के संचालन के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: उद्यमिता के मूल सिद्धांत
पेपर कोड: UG0204-BDM-63T-252
सेमेस्टर: III

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
III	UG0204-BDM-63T-252	उद्यमिता के मूल सिद्धांत	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
मध्यवर्ती	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

UG0204-BDM-63T-252 :उद्यमिता के मूल सिद्धांत

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. छात्रों को प्रेरित करना और उन्हें उद्यमशीलता की मानसिकता अपनाने में मदद करना।
2. उद्यमिता और लघु व्यवसाय प्रबंधन की मूल अवधारणा, भूमिका और संरचनाओं से परिचित कराना।
3. उद्यमिता में नवीनतम रुझानों और विकास को समझना।
4. उद्यमियों के लिए सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना।
5. उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय प्रबंधन की समस्याओं का विश्लेषण एवं समाधान करना।

इकाई I: उद्यमिता की अवधारणा, उद्यमिता की भूमिका, उद्यमिता के प्रकार, उद्यमिता गुण, उद्यमिता और प्रबंधक, उद्यमिता की समस्याएँ।

इकाईII: राजस्थान के उद्यमी, ग्रामीण उद्यमी, तकनीकी उद्यमी, कृषि उद्यमी, महिला उद्यमी, उद्यमिता प्रशिक्षण और विकास, उद्यमिता को सरकारी प्रोत्साहन।

इकाईIII: लघु और मध्यम उद्यमों की अवधारणा, लघु और मध्यम उद्यमों की भूमिका, भारत में लघु और मध्यम उद्यमों को नियंत्रित करने वाली नीतियाँ, लघु और मध्यम व्यवसाय उद्यमों का प्रबंधन, लघु और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहित करने वाले वित्तीय संस्थानों की भूमिका।

इकाईIV: लघु उद्यमों की स्थापना की प्रक्रिया, भारत में लघु उद्योगों की संगठन संरचना, भारत में लघु उद्योगों के लिए कराधान लाभ और रियायतें, भारत में लघु उद्योगों की समस्याएँ।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

• राव, टी. वेंकटेश्वर और पारीक, उदय, विकासशील उद्यमिता, नई दिल्ली लर्निंग सिस्टम कंपनी।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

•भंसाली, उद्यमिता विकास, एचपीबी।

• शर्मा, प्रदीप, उद्यमिता और लघु व्यवसाय प्रबंधन, आरबीएसए, जयपुर।

• देसाई, द्रेवसंत, उद्यमिता और लघु व्यवसाय प्रबंधन के बुनियादी सिद्धांत, हिमालय पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट। लिमिटेड

• पटना, के.के., फंडामेंटल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप, हिमालय पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड

• श्रीवास्तव, एस.बी., ए प्रैक्टिकल गाइड टू इंडस्ट्रियल एंटरप्रेन्योरशिप, सुल्तान चंद एंड संस।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. उद्यमिता और सफल उद्यमियों के बारे में समझ विकसित करना।
2. उद्यमिता मानसिकता विकसित करना, जिसमें प्रमुख कौशल जैसे कि वार्ता, व्यक्तिगत बिक्री और संचार सीखना शामिल है।
3. उद्यमियों की सोच प्रक्रिया को समझना और उद्यमिता दृष्टिकोण से उनकी ताकत, कमजोरियाँ और निर्णय लेने की शक्ति को समझना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: विपणन के सिद्धांत
पेपर कोड: UG0204-BDM-64T-253
सेमेस्टर: IV

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
IV	UG0204-BDM-64T-253	विपणन के सिद्धांत	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
मध्यवर्ती	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

UG0204-BDM-64T-253 : विपणन के सिद्धांत

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. विपणन प्रबंधन की बुनियादी अवधारणाओं और तकनीकों से परिचित कराना।
2. उपभोक्ताओं के व्यवहार को समझना।
3. विपणन मिश्रण तत्वों के बारे में जागरूकता पैदा करना।
4. जटिल और तेजी से बदलते कारोबारी माहौल में विपणन समस्याओं का विश्लेषण और समाधान करना।

यूनिट-I:विपणन और विपणन प्रबंधन का परिचय, विपणन अवधारणाएँ।उपभोक्ता और खरीद व्यवहार। बाजार विभाजन, लक्ष्यीकरण और स्थिति निर्धारण।

यूनिट-II:उत्पाद निर्णय - उत्पाद की अवधारणा, उत्पादों का वर्गीकरण, उत्पाद मिश्रण निर्णय- उत्पाद लाइन और उत्पाद मिश्रण, ब्रांड. नए उत्पाद विकास- चरण, उत्पाद जीवन चक्र- अवस्था और रणनीतियाँ।

इकाई-III:विपणन वातावरण- वृहद और सूक्ष्म घटक तथा विपणन निर्णयों पर उनका प्रभाव;विपणन मिश्रण - मूल्य, स्थान, प्रचार और भौतिक वितरणमूल्य निर्णय - मूल्य निर्धारण उद्देश्य, मूल्य निर्धारण को प्रभावित करने वाले कारक, मूल्य निर्धारण नीतियाँ और बाधाएँ, विभिन्न मूल्य निर्धारण विधि - नए उत्पाद का मूल्य निर्धारण, उत्पाद मिश्रण मूल्य निर्धारण रणनीतियाँ और मूल्य समायोजन रणनीति।

इकाई-IV:वितरण चैनल और भौतिक वितरण निर्णय: वितरण चैनलों की प्रकृति, कार्य और प्रकार; वितरण चैनल मध्यस्थ; चैनल प्रबंधन निर्णय; खुदरा और थोक बिक्री।
प्रचार निर्णय: संचार प्रक्रिया; प्रचार मिश्रण - विज्ञापन, व्यक्तिगत बिक्री, बिक्री संवर्धन, प्रचार और जनसंपर्क; विज्ञापन बजट का निर्धारण; कॉपी डिजाइनिंग और परीक्षण; मीडिया चयन; विज्ञापन प्रभावशीलता; बिक्री संवर्धन - उपकरण और तकनीक।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- के.एस. चन्द्रशेखर, विपणन प्रबंधन पाठ और मामले, टाटा मैकग्रा-हिल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- गोविंदराजन, मार्केटिंग प्रबंधन अवधारणाएं, मामले, चुनौतियां और रुझान, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
- फिलिप कोटलर, मार्केटिंग प्रबंधन- विश्लेषण योजना और नियंत्रण, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली,
- रामास्वामी. वी एस और नामाकुमारी। एस, मार्केटिंग प्रबंधन-योजना कार्यान्वयन और नियंत्रण, मैकमिलन बिजनेस बुक्स, नई दिल्ली
- स्टैंटन, एट्ज़ेल, वॉकर, फ़ंडामेंटल्स ऑफ़ मार्केटिंग, टाटा-मैकग्रा हिल, नई दिल्ली।
- सक्सेना, राजन, मार्केटिंग प्रबंधन, टाटा-मैकग्रा हिल, नई दिल्ली।
- मैक्कार्थी, ई.जे., बेसिक मार्केटिंग: ए मैनेजरियल अप्रोच, इरविन, न्यूयॉर्क।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. विपणन में उपयोग किए जाने वाले प्रमुख विश्लेषणात्मक ढाँचों और उपकरणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
2. विपणन समस्याओं को हल करने के लिए प्रमुख विपणन सिद्धांतों, ढाँचों और उपकरणों को लागू करना।
3. उपयुक्त विपणन रणनीतियों की पहचान करने और उन्हें प्राथमिकता देने के लिए किसी फर्म के बाहरी और आंतरिक विपणन वातावरण की जानकारी का उपयोग करना।
4. मौजूदा विपणन साहित्य और विपणन वातावरण में नए विकास के साथ जुड़ाव और प्रतिबिंब के माध्यम से आलोचनात्मक निर्णय लेना।
5. वाणिज्यिक और गैर-वाणिज्यिक समायोजन में संगठनात्मक सफलता प्राप्त करने में विपणन कार्य और इसकी भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
6. विपणन गतिविधियों से जुड़ी नैतिक और पर्यावरणीय चिंताओं का मूल्यांकन करना और उन पर कार्रवाई करना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: मानव संसाधन प्रबंधन के मूल सिद्धांत
पेपर कोड: UG0204-BDM-64T-254
सेमेस्टर: IV

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
IV	UG0204-BDM-64T-254	मानव संसाधन प्रबंधन के मूल सिद्धांत	5	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
मध्यवर्ती	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

UG0204-BDM-64T-254 :मानव संसाधन प्रबंधन के मूल सिद्धांत

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को मानव संसाधन प्रबंधन के ज्ञान से अवगत कराना है।

यूनिट I:मानव संसाधन प्रबंधन - अर्थ, परिभाषा, महत्व, मानव संसाधन प्रबंधन की अवधारणा, मानव संसाधन प्रबंधन के कार्य, मानव संसाधन प्रबंधक की भूमिका और क्षमताएँ, मानव संसाधन प्रबंधन बनाम व्यक्तिगत प्रबंधन। मानव संसाधन योजना: अवधारणा, उद्देश्य, मानव संसाधन नियोजन की आवश्यकता और प्रक्रिया।

यूनिट II:कार्य विश्लेषण: अर्थ और परिभाषाएँ, उद्देश्य, उपयोग, कार्य विश्लेषण की प्रक्रिया और तकनीकें। कार्य विवरण और कार्य विनिर्देशन: कार्य विवरण का अर्थ और परिभाषा, अच्छी कार्य विवरण की सामग्री और विशेषताएँ, कार्य विनिर्देशन का अर्थ, कार्य विवरण बनाम कार्य विनिर्देशन।

यूनिट III:भर्ती: अर्थ और परिभाषाएँ, भर्ती प्रक्रिया, भर्ती को प्रभावित करने वाले कारक, भर्ती के स्रोत। चयन: अर्थ और परिभाषाएँ, चयन प्रक्रिया। स्थानन: अवधारणा, स्थानन के सिद्धांत।

यूनिट IV:प्रशिक्षण: परिभाषा और अर्थ, प्रशिक्षण की आवश्यकता और महत्व, व्यवस्थित प्रशिक्षण योजना में चरण, प्रशिक्षण विधियाँ और तकनीकें। प्रदर्शन मूल्यांकन: अर्थ और परिभाषा, उद्देश्य, प्रदर्शन मूल्यांकन प्रक्रिया, प्रदर्शन मूल्यांकन की विधियाँ।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- डी'एन्ज़ो, डेविड ए. और स्टीफ़न पी. रॉबिंस: मानव संसाधन प्रबंधन, जॉन विले एंड संस, नई

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

दिल्ली।

- इयान, बियर्डवेल और लेन होल्डन: मानव संसाधन प्रबंधन, मैकमिलन, दिल्ली।
- डेसलर, गैरी: मानव संसाधन प्रबंधन, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
- सैय्यदैन मिर्ज़ा एस.: मानव संसाधन प्रबंधन, धनपत राय एंड कंपनी प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।
- छाबड़ा, टी.एन.: मानव संसाधन प्रबंधन, धनपत राय एंड कंपनी प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।
- द्विवेदी, आर.एस.: मानव संसाधन प्रबंधन: भारतीय उद्यमों में कार्मिक प्रबंधन, गलगोटिया प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली।
- हार्ज़िंग, ए.डब्लू. और जोरिस वान रूइसेवेल्ट: अंतर्राष्ट्रीय मानव संसाधन प्रबंधन: एक एकीकृत दृष्टिकोण, सेज प्रकाशन, लंदन।
- सीमा सांघी: मानव संसाधन प्रबंधन, विकास पब्लिशिंग हाउस।
- एस.एस. खानका: मानव संसाधन प्रबंधनएम एस. चंद प्रकाशन।
- शर्मा और सुराणा: सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध (हिन्दी)।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. मानव संसाधन प्रबंधन, कार्य विश्लेषण, कार्य डिजाइन, भर्ती, चयन, स्थानन और प्रदर्शन मूल्यांकन की अवधारणा को समझना और प्रदर्शित करना।

2. व्यक्तिगत और व्यावसायिक स्तर पर एचआर प्रबंधकों की गुणवत्ता, प्रशिक्षण की विधियों और तकनीकों को लागू करना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: विक्रय संवर्धन तथा विक्रय प्रबंधन
पेपर कोड: UG0204-BDM-75T-351

सेमेस्टर:V

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
V	UG0204-BDM-75T-351	विक्रय संवर्धन तथा विक्रय प्रबंधन	7	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
उच्च स्तर	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. छात्रों को विक्रय संवर्धन में उपयोग की जाने वाली मुख्य अवधारणाओं तथा तकनीकों से परिचित कराना, जिसमें अल्पकालिक विक्रय वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न उपकरण तथा रणनीतियाँ शामिल हैं।
2. समग्र विपणन तथा व्यावसायिक रणनीति के भीतर विक्रय संवर्धन रणनीतियों को एकीकृत करने की क्षमता विकसित करना, उन्हें ब्रांड उद्देश्यों के साथ संरेखित करना।
3. विक्रय प्रबंधन के सिद्धांतों को समझना, विक्रय बल का प्रबंधन करने, लक्ष्य निर्धारित करने, सेल्सपर्सन को प्रेरित करने तथा प्रभावी विक्रय रणनीतियों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना।
4. छात्रों को उपभोक्ता तथा व्यापार संवर्धन दोनों से परिचित कराना तथा विक्रय को बढ़ावा देने में ग्राहकों तथा वितरकों को शामिल करने के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न विधियों से परिचित कराना।

इकाई I:विक्रय संवर्धन: विक्रय संवर्धन की प्रकृति, भूमिका तथा महत्व; विक्रय संवर्धन के प्रकार: डीलर संवर्धन, उपभोक्ता संवर्धन, औद्योगिक वस्तुओं तथा उपभोक्ता उत्पादों का विक्रय संवर्धन; निर्यात विक्रय संवर्धन। आंतरिक संगठन, विक्रय संवर्धन विभाग के कार्य; विक्रय संवर्धन कार्यक्रम का मूल्यांकन। विज्ञापन तथा व्यक्तिगत विक्रय के बीच अंतर।

इकाई II:विक्रय प्रबंधन: एक कैरियर के रूप में विक्रय, एक विक्रेता के गुण, उत्पाद ज्ञान, प्रभावी भाषण तथा उपभोक्ता संबंध। विक्रय संगठन: शाखा स्थापना, भर्ती तथा चयन, प्रशिक्षण प्रेरणा, विक्रय कर्मियों का पारिश्रमिक।

इकाई III:विक्रय प्रक्रिया: योजनाबद्ध विक्रय दृष्टिकोण, पूर्व दृष्टिकोण, आपत्तियों की बैठक, विक्रय कॉल को बंद करना, विक्रय पूर्वानुमान, विक्रय कोटा तथा विक्रय क्षेत्र।

इकाई IV:उपभोक्ता मनोविज्ञान, खरीद व्यवहार, उद्देश्य। विक्रय संचालन का नियंत्रण: विक्रेता रिपोर्ट, विक्रय लागत की बैठक तथा विक्रय लागत नियंत्रण।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- कुमार, पी. (2007); विक्रय तथा वितरण प्रबंधन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य; पियर्सन एजुकेशन इंडिया, नोएडा, भारत।

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

- शर्मा, पी., तथा सिंह, जे. (2012); विक्रय तथा विक्रय प्रबंधन; हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, भारत।
- राव, एस. (2010); विक्रय प्रबंधन: पाठ तथा मामले; पियर्सन एजुकेशन इंडिया, नोएडा, भारत।
- चूनावाला, एस. ए., तथा सेठिया, आर. (2014); विक्रय तथा वितरण प्रबंधन; हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, भारत।
- मोंगा, एम. (2011); विक्रय संवर्धन तथा विपणन संचार; विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, भारत।
- रघुनंदन, पी. (2009); विक्रय प्रबंधन: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य; विले इंडिया, नई दिल्ली, भारत।
- छाबड़ा, टी. एन. (2011); विक्रय तथा वितरण प्रबंधन; धनपत राय एंड कंपनी, नई दिल्ली, भारत।
- जैन, एस. सी. (2013); विक्रय संवर्धन तथा विपणन रणनीति; प्रेंटिस-हॉल इंडिया, नई दिल्ली, भारत।
- गुप्ता, एस. एल. (2012); विक्रय प्रबंधन: पाठ तथा मामले; पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत।
- शर्मा, एम.,तथा जैन, आर. (2015); विक्रय तथा वितरण प्रबंधन; सेनगेज लर्निंग इंडिया, नई दिल्ली, भारत।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. मूल्य संवर्धन, व्यापार संवर्धन तथा उपभोक्ता प्रोत्साहन सहित विभिन्न प्रकार के बिक्री संवर्धनों को समझना तथा समग्र विपणन रणनीति में उनकी भूमिकाएँ।
2. विशिष्ट बाज़ार खंडों, उत्पाद श्रेणियों तथा व्यावसायिक लक्ष्यों के अनुरूप प्रभावी बिक्री संवर्धन अभियान बनाना तथा उन्हें क्रियान्वित करना।
3. बिक्री टीम के प्रबंधन में भर्ती, प्रशिक्षण, प्रेरणा, प्रदर्शन मूल्यांकन तथा बिक्री लक्ष्य निर्धारित करने सहित प्रमुख जिम्मेदारियों को समझना।
4. प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों (KPI) तथा अन्य प्रासंगिक मैट्रिक्स का उपयोग करके बिक्री, ग्राहक व्यवहार तथा लाभप्रदता पर बिक्री संवर्धन के प्रभाव का आकलन करना।

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: उत्पादन एवं संचालन प्रबंधन

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पेपर कोड:UG0204-BDM-75T-352

सेमेस्टर:V

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
V	UG0204-BDM-75T-352	उत्पादन एवं संचालन प्रबंधन	7	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
उच्च स्तर	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. उत्पादन प्रबंधन अवधारणाओं, उद्देश्यों तथा निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की समझ विकसित करना।
2. छात्रों को उत्पादन प्रौद्योगिकी, प्रक्रिया प्रबंधन तथा संयंत्र लेआउट योजना से परिचित कराना।
3. छात्रों को उत्पादन योजना, कार्य डिजाइन, औद्योगिक सुरक्षा तथा गुणवत्ता नियंत्रण के ज्ञान से लैस करना।
4. संचालन प्रबंधन के प्रमुख पहलुओं से परिचित कराना, जिसमें पूर्वानुमान, ब्रेक-ईवन विश्लेषण तथा इन्वेंट्री नियंत्रण शामिल हैं।

इकाई I: उत्पादन प्रबंधन: अर्थ, उद्देश्य, प्रकृति। निर्णय लेना: उत्पाद प्रबंधक के कार्य, समस्याएँ। उत्पादन प्रणाली: उत्पाद योजना तथा विकास। उत्पाद डिजाइन।

इकाई II: उत्पादन तकनीक: अर्थ, भूमिका, वर्गीकरण; प्रक्रिया प्रबंधन: योजना, चयन, प्रक्रिया, विश्लेषण; संयंत्र लेआउट: आवश्यकता, मानदंड; संयंत्र योजना तथा डिजाइन।

इकाई III: उत्पादन योजना तथा नियंत्रण: वर्गीकरण, कार्य, कारक, दायरा, लाभ; कार्य डिजाइन: निर्णय, कारक। औद्योगिक सुरक्षा: दुर्घटना के कारण, कार्य अध्ययन, निरीक्षण तथा गुणवत्ता नियंत्रण।

इकाई IV: संचालन प्रबंधन: अर्थ, क्षेत्र, संचालन रणनीति; हाल के रुझान; ब्रेक ईवन विश्लेषण: धारणाएँ, यांत्रिकी; पूर्वानुमान: चरण, विधियाँ। नियोजन सुविधा: प्रक्रिया चयन तथा प्रक्रिया प्रवाह विश्लेषण; स्कन्ध प्रबंधन: महत्व, स्कन्ध नियंत्रण प्रणाली।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- चेस, आर. बी., एक्विलानो, एन. जे., तथा अग्रवाल, एम. (2010)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। टाटा मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन, नई दिल्ली, भारत
- महाजन, एम. (2011)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत
- कुमार, एस.,तथा सुरेश, एन. (2014)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, भारत
- कोठारी, सी. आर. (2013)। संचालन प्रबंधन। विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, भारत
- तेलसांग, एम. (2012)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। एस. चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली, भारत

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

- वर्मा, ए. (2012)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन: एक व्यापक दृष्टिकोण। एक्सेल बुक्स इंडिया, नई दिल्ली, भारत
- सक्सेना, ए. (2010)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन इंडिया, नई दिल्ली, भारत
- चूनावाला, एस. ए., तथा पटेल, डी. (2013)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, भारत
- पन्नीरसेल्वम, आर. (2012)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत
- शर्मा, एस. डी., तथा शर्मा, ए. (2015)। उत्पादन तथा संचालन प्रबंधन। सेनगेज लर्निंग इंडिया, नई दिल्ली, भारत

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. उत्पादन तथा परिचालन प्रबंधन में उपयोग की जाने वाली प्रमुख अवधारणाओं, पद्धतियों तथा तकनीकों को समझना, जिसमें प्रक्रिया डिजाइन, क्षमता नियोजन तथा आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन शामिल है।
2. उत्पादन दक्षता में सुधार, लागत कम करने तथा उत्पादों तथा सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रभावी परिचालन रणनीतियों का विकास तथा अनुप्रयोग करना।
3. परिचालन उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए लेआउट, वर्कफ़्लो, क्षमता तथा इन्वेंट्री प्रबंधन जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए उत्पादन प्रणालियों को डिज़ाइन तथा अनुकूलित करना।
4. ग्राहक की मांग के साथ उत्पादन क्षमता को संतुलित करते हुए, श्रम, सामग्री तथा उपकरण सहित संसाधनों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना।

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)

पाठ्यक्रम का शीर्षक: अंतर्राष्ट्रीय विपणन

पेपर कोड:UG0204-BDM-76T-353

सेमेस्टर:VI

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
VI	UG0204-BDM-76T-353	अंतर्राष्ट्रीय विपणन	7	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
उच्च स्तर	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय विपणन की मूलभूत अवधारणाओं तथा सिद्धांतों तथा वैश्विक कारोबारी माहौल में इसके महत्व से परिचित कराना।
2. कंपनियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश करने तथा विस्तार करने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीतियों की समझ विकसित करना, बाजार अनुसंधान, प्रवेश मोड तथा अंतर्राष्ट्रीय विपणन मिश्रण निर्णयों पर ध्यान केंद्रित करना।
3. अध्ययन करना कि सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक कारक अंतर्राष्ट्रीय विपणन निर्णयों को कैसे प्रभावित करते हैं तथा स्थानीय बाजारों के लिए विपणन रणनीतियों को कैसे अनुकूलित किया जाए।
4. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, वैश्विक आर्थिक रुझान तथा विपणन प्रथाओं को प्रभावित करने वाले क्षेत्रीय अंतरों सहित गतिशील अंतर्राष्ट्रीय विपणन वातावरण में अंतर्दृष्टि प्रदान करना।

इकाई I: परिचय: अंतर्राष्ट्रीय विपणन का अर्थ तथा महत्व, अंतर्राष्ट्रीय तथा घरेलू विपणन के बीच अंतर; अंतर्राष्ट्रीय विपणन का क्षेत्र, निर्यात तथा आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय बाजार का प्रारंभिक चयन; विपणन अनुसंधान: क्षेत्र, प्रक्रिया तथा बाहरी वातावरण का प्रभाव।

इकाई II: उत्पाद योजना तथा विकास: विदेशी बाजार के लिए उत्पादों को विकसित करने की प्रक्रिया, उत्पाद जीवन चक्र, गुणवत्ता नियंत्रण। मूल्य निर्धारण: मूल्य निर्धारण निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक, मूल्य निर्धारण विधियाँ, मूल्य उद्धरण तथा हस्तांतरण मूल्य निर्धारण।

इकाई III: प्रचार: विज्ञापन तथा ब्रांड रणनीतियाँ, ट्रेडमार्क, प्रचार विधियाँ। भौतिक वितरण: चैनलों के प्रकार, चैनलों की पसंद को प्रभावित करने वाले कारक, पैकेजिंग कारक, लॉजिस्टिक निर्णय।

इकाई IV: निर्यात वित्तपोषण: अर्थ, भुगतान के तरीके, विनिमय पत्र, ऋण पत्र, खरीदार का ऋण, आपूर्तिकर्ताओं का ऋण, पुनर्वित्त सुविधाएँ। संस्थागत समर्थन: एक्जिम-बैंक, ईसीजीसी, वैश्वीकरण का प्रभाव।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- राजगोपाल, पी. (2014)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन। विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, भारत।
- सक्सेना, आर. (2013)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन। टाटा मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन, नई दिल्ली, भारत।
- भट्टाचार्य, डी. के. (2012)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन प्रबंधन। पियर्सन एजुकेशन इंडिया, नोएडा, भारत।
- चिन्कोटा, एम. आर., तथा रोनकेन, आई. ए. (2011)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन। सेनगेज लर्निंग इंडिया, नई दिल्ली, भारत।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

- जैन, एस. सी. (2014)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन। हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, भारत।
- कुमार, वी., तथा सेठी, एस. (2015)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य। विले इंडिया, नई दिल्ली, भारत।
- चौधरी, ए. (2012)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन रणनीति। पियर्सन एजुकेशन इंडिया, नोएडा, भारत।
- राव, वी. एस. पी. (2011)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन। पियर्सन एजुकेशन इंडिया, नोएडा, भारत।
- कृष्णा, एस. (2013)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन: वैश्विक दृष्टिकोण तथा रणनीतियाँ। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, भारत।
- शर्मा, आर.,तथा शर्मा, एम. (2014)। अंतर्राष्ट्रीय विपणन प्रबंधन। मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन इंडिया, नई दिल्ली, भारत।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. प्रमुख वैश्विक विपणन अवधारणाओं, रूपरेखाओं तथा प्रथाओं को समझें, तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में व्यावसायिक संचालन के लिए उनके अनुप्रयोग को समझना।
2. विशिष्ट वैश्विक बाजारों के अनुरूप उत्पाद परिचय, मूल्य निर्धारण, वितरण तथा प्रचार के लिए व्यापक अंतर्राष्ट्रीय विपणन रणनीतियाँ तथा योजनाएँ विकसित करना।
3. क्षेत्रों में सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक अंतरों की पहचान करें तथा उनका मूल्यांकन करें तथा स्थानीय उपभोक्ता वरीयताओं तथा जरूरतों को पूरा करने के लिए विपणन रणनीतियों को अपनाना।
4. बाजार की स्थितियों तथा कंपनी के उद्देश्यों के आधार पर उपयुक्त बाजार प्रवेश रणनीतियों (जैसे, निर्यात, संयुक्त उपक्रम, प्रत्यक्ष निवेश) का आकलन तथा चयन करना।

कार्यक्रम का नाम: तीन/ चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)
पाठ्यक्रम का शीर्षक: संगठनात्मक व्यवहार
पेपर कोड:UG0204-BDM-76T-354

सेमेस्टर:VI

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

VI	UG0204-BDM-76T-354	संगठनात्मक व्यवहार	7	6
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रम का वितरण प्रकार		
उच्च स्तर	प्रमुख	व्याख्यान - प्रति सप्ताह छः घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म- 30 अंक EoSE- 120 अंक	मिडटर्म -12 अंक EoSE-48 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. संगठनात्मक व्यवहार की मौलिक अवधारणाओं, सिद्धांतों तथा चुनौतियों का परिचय देना।
2. कार्यस्थल में धारणा, व्यक्तित्व, मूल्यों, दृष्टिकोण तथा कार्य की संतुष्टि की समझ विकसित करना।
3. संगठनात्मक व्यवस्था में समूह की गतिशीलता, टीम निर्माण तथा पारस्परिक व्यवहार का विश्लेषण करना।
4. संघर्ष, तनाव प्रबंधन, बातचीत तथा संगठनात्मक परिवर्तन प्रक्रियाओं का पता लगाना।

इकाई I: संगठन व्यवहार: अर्थ, अवधारणा, भूमिका, चुनौतियाँ तथा अवसर। संगठन व्यवहार, सामाजिक व्यवस्था तथा संगठन, संस्कृति के सिद्धांत।

इकाई II: धारणा: प्रकृति, महत्व, धारणा को प्रभावित करने वाले कारक। व्यक्तित्व: अर्थ, निर्धारक, व्यक्तित्व लक्षण तथा प्रकार, मूल्य, दृष्टिकोण तथा कार्य की संतुष्टि।

इकाई III: पारस्परिक व्यवहार तथा समूह की गतिशीलता: अर्थ, मानदंड तथा भूमिकाएँ, समूह के सिद्धांत, सामंजस्य, अनौपचारिक समूह की गतिशीलता, टीम तथा टीम निर्माण।

इकाई IV: संघर्ष: परिभाषा, प्रकार, कारण, बातचीत की प्रक्रिया, बातचीत में व्यक्तिगत अंतर; तनाव के कारण तथा इसके प्रभाव, तनाव तथा संघर्ष प्रबंधन। संगठनात्मक परिवर्तन: अर्थ, प्रकृति, प्रभावित करने वाले कारक, नियोजित परिवर्तन, परिवर्तन का प्रतिरोध, परिवर्तन एजेंट।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- रॉबिंस, एस. पी., तथा जज, टी. ए. (2013)। संगठनात्मक व्यवहार। पियर्सन एजुकेशन इंडिया, नोएडा, भारत।
- सिंह, के. (2014)। संगठनात्मक व्यवहार: पाठ तथा मामले। हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, भारत।
- पारीक, यू. (2012)। संगठनात्मक व्यवहार को समझना। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, भारत।
- लुथांस, एफ.,तथा श्रीवास्तव, पी. (2012)। संगठनात्मक व्यवहार। टाटा मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन, नई दिल्ली, भारत।
- जैन, एस. सी., तथा कौर, एस. (2012)। संगठनात्मक व्यवहार तथा प्रबंधन। विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, भारत।
- कोहली, ए.,तथा सिंह, आर. (2011)। संगठनात्मक व्यवहार: एक आधुनिक परिप्रेक्ष्य। एस. चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली, भारत।
- सरमा, ए. (2014)। संगठनात्मक व्यवहार: अवधारणाएँ, विवाद, अनुप्रयोग। मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन इंडिया, नई दिल्ली, भारत।
- चौधरी, ए.,तथा नायर, पी. (2013)। संगठनात्मक व्यवहार। पियर्सन एजुकेशन इंडिया, नोएडा, भारत।

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

- शर्मा, ए.,तथा कुमार, पी. (2015)। संगठनात्मक व्यवहार तथा मानव संसाधन प्रबंधन। सेनगेज लर्निंग इंडिया, नई दिल्ली, भारत।
- त्रिपाठी, पी. सी. (2011)। संगठनात्मक व्यवहार। टाटा मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन, नई दिल्ली, भारत।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. संगठनात्मक व्यवहार अवधारणाओं तथा उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों की समझ का प्रदर्शन करें।
2. व्यक्तिगत तथा समूह प्रदर्शन पर धारणा, व्यक्तित्व तथा दृष्टिकोण के प्रभाव का विश्लेषण करें।
3. प्रभावी पारस्परिक संबंधों के लिए समूह की गतिशीलता, टीमवर्क तथा रणनीतियों का मूल्यांकन करें।
4. संगठनों में संघर्ष समाधान, तनाव प्रबंधन तथा परिवर्तन प्रबंधन तकनीकों को लागू करें।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR